

हमर भुटकुन भाइके अहाँलोकनि अवश्य चीन्हैत होयबनि । हुनक व्यक्तित्व एहन छनि जे हुनका बिनु चिन्हने कोनो व्यक्ति अपनाकेँ प्रसन्न रहनिहार अथवा आनन्द उठौनिहारक कोटिमे बुझिए नै सकैत अछि । यदि न्यो हमर भुटकुन भाइसे अपरिचितो रहि दावा करैत अछि जे प्रसन्न रहैत अछि तँ ओकर दावा ओहने फौक बुझबाक चाही जेना गृहमक थोक-व्यापारक राष्ट्रियकरणकेँ आजुक भारत सरकार सफल बुझबाक दावा कऽ रहल अछि अथवा बंगला देशक संग लड़बाक क्रममे पाकिस्तानक नेता जुलफिकार अली भुट्टो हजार वर्ष धरि लड़ैत रहबाक दावा करैत छलाह ।

कनेक कालक हेतु हम मानि लैत छी जे दुर्भाग्य अथवा दुर्योगवश अहाँ-लोकनिमेसँ किछु गोटे भुटकुन भाइसँ परिचय नहि पाबि सकलहुँ अछि, तँ 'शुभस्यशीघ्रम्' एहि आप्त वाक्यक अनुसार शीघ्रातिशीघ्र परिचय प्राप्त कऽ ली से उत्तम । यद्यपि नीक होइत जे एही वस्तुकेँ अहाँलोकनि टेली-वीजनपर देखितहुँ तँ हमर कयनक सत्यतामे सन्देह नहि रहि जाइत—अन्न-पानिक व्यवस्था तँ वादोमे होयतैक, टेलीवीजन-सन आवश्यक अनिवार्य आवश्यकताक अवस्था भारत सरकार शीघ्र करबाक हेतु चिन्तित अछि से परम प्रसन्नताक विषय थिक, से सम्भव भेला उत्तर हम अपन भुटकुन भाइसँ अवश्य साक्षात्कार करायब तावत एही माध्यमसँ हुनक परिचय सुनू ।

समसँ पहिने हमर भुटकुन भाइक हुलिया सुनि लियऽ । लोक कहैत छैक, तीसी-सन नाम आ मसुरी-सन चाकर, मुदा हमर भुटकुन भाइ तकर विलोम छथि अर्थात् मसुरी-सन नाम तथा तीसी-सन चाकर छथि । ई तँ भेल हुनक लम्बाइ-चौड़ाइ, आब हुनक आन हुलिया सुनू । रंगमे हमर भुटकुन भाइ ने आगिक भुभुका-सन गोर छथि ने आद्राक पानि पड़ल जामुन-सन कारी, विशेषता ई छनि जे गोर लोकक लगमे ठाढ़ कऽ देबनि तँ पिण्डश्याम बूझि पड़ताह आ कारी लोक लग ठाढ़ कऽ देला उत्तर गोर अर्थात् समुद्रतटीय जलवायु जकाँ ई समशीतोष्ण छथि, अनुष्णाशीत नहि ।

हमर भुटकुन भाइकेँ भकारसँ बहुत बेसी प्रेम छनि । अपन नामक आदिमे भकार देखि हुनका असीम आनन्दक अनुभव होइत छनि । भगवान, भगवती, भोलानाथ सममे पहिल अक्षर भकारे थिक से स्मरण होइत बीच बाटोपर ठाढ़ भऽ पाँच मिनट आनन्द लुटबाक हेतु हमर भुटकुन भाइ आँखि मूनि समाधिस्थ जकाँ भऽ जाइत छथि । ओना, अपनहुँ ओ आनन्दमूर्ति ए छथि । भगवतीक उपासक आ भोलाबाबाक भक्त तँ भाइकेँ अपन सवारी बुझैत छथि ।

भगवद्भजनमे तेना तल्लीन रहैत छथि जे अहाँक ओहि ठाम जयबाक पलखति ए नै भेटति । यदि कदाचित् कोनो भोजमे अहाँ निमन्त्रण दऽ देखनि तँ बाध्य भऽ आवऽ पड़ति । साधारण लोक आठ आना पाइ खच कऽ कोनो सवारी कऽ लेत आ सुट दऽ अहाँक ओहि ठाम पहुँचि जायत, मुदा हमर भुटकुन भाइ ओहि पाइक काबुली बदाम, अवजूस, अणाची आनि, सिलौट-लोड़ीक संयोग करा, अंगन्यास कऽ हरियरी छानि लेताह आ दस मिनटमे हुनक हाथीक हौदा कसा जयति । बाटपर पयर आ जीहपर दुर्गा, फेर देखि लियऽ जे नमस्तस्यै नमस्तस्यैक तालपर कोम्हर दऽ कखन अहाँक ओहि ठाम पहुँचि जयताह तकर खबरि हुनका अपनहुँ नहि भऽ पौति ।

तँ हम कहि रहल छलहुँ जे हमर भुटकुन भाइकेँ भकारसँ बड़ बेसी प्रेम छनि तकर प्रमाण यँह जे जलपानमे भूजा, तरकारीमे भाँटा, उत्सवमे भोज, भोजनमे भात, गीतमे भजन, भावमे भक्ति, सम्बन्धमे भँयारी, छात्रमे भुसकौल आ योगीमे भोग बड़ बेसी पसिन्न करैत छथि । भगवतीक अनु-कम्पासँ जँ कदाच एको बेर भेंट, परिचय भऽ गेल तँ भऽ सकै छ जे अहाँकेँ ओ विसरियो जाथि, मुदा अहाँ जिनगी भरि हुनका विसरि नहि सकैत छियनि ।

विकासक एहि क्षणमे विलक्षण परिवर्तनक सत्यताकेँ नकारि देव सर्वथा असम्भव । जखन जीरो-मरीचोक रूपगुणाकारक दक्ष परीक्षक बूढ़ो-बुढ़ानुसकेँ जीरो पावरक चश्मा लगयबाक सेहन्ता सिहा दैछ, तखन आर आश्चर्ये कथी ?

जीरो पावर

— श्रीचन्द्रनाथ झा मिहिर

एक दिन हम पुछि देलियनि—भाइ ! अहाँकेँ भकारसँ एतेक प्रेम किएक अछि तँ उत्तर देलनि जे तत्त्वतः भकाराक्षर प्रेमक मूल थिक । तकर बाद भाष्य आरम्भ कयलनि—देखू उपासना करी तँ भगवतीक, जनिक प्रसाद वास्तवमे प्रसाद होइत छनि 'प्रसादस्तु प्रसन्नता । भक्ति भोला बाबाक, जनिका पुजाक हेतु कोनो धूम-धड़ाकाक प्रयोजन नहि । बाम हाथक मध्यमा आङ्गुरकेँ ठाढ़ कऽ ओहीपर एक लोटा पानि ढारि 'वंवू' कहि दियौ, ताहीपर प्रसन्न, अठरनठरन, आशुतोष । पेयमे हुनकेँ परमप्रिय भाङ्ग, एकदम सस्त, चारि टा मरीचोक योगमे घसिकऽ चढ़ा लियऽ तँ त्रिभुवनक बादशाह बन जाउ । तरकारीमे भाँटा, मोन हो तँ भूजि लियऽ, जीह पनिआय तँ भँटवर बना लियऽ, इच्छा हो तँ अदौड़ी मिलाकऽ झोरा लियऽ लटपट, दालि तरकारी दुनूक विश्राम आ हड़बड़ायल रही तँ कनेक हीड । पाचिकऽ भस्मुर आगिमे घऽ दियौक, कनेक नोन-तेल-मेरिचाइक योग पड़ैत उड़ि जायत । जलपानमे भूजा, कोनो बखेड़ा नहि, खापरिमे लाइनिसँ चलाकऽ तैयार, थोड़बो रहत तँ ततवा पानि माडत जे तीन घंटा धरि ओहीपर खेपि लेब । गीतमे भजन, जकारा ने राग चाही ने ताल, ने साज-बाज, मात्र ढोल-झालिपर झमका दियऽ, ढोल-महल्ला गनगना उठत । भोजनमे भात, यदि आन वस्तुक जोगाड़ नहि भऽ सकल तँ ओकरे रसमे नोन मिला-सरपेटि जाउ, एकदम निश्चिन्त, आ चेलामे भुसकौल, जाहि विषयकेँ अपनो बुझबामे सन्देह रहय ताह बातकेँ उन्टा-पुन्टा कऽ कहि दियौ, बिनु बुझनो कहि देत जे खूब नी जकाँ बूझि गेलिएक आ सेवा करबामे सतत दत्तचित । यँह थिकनि । भुटकुन भाइक भकारक प्रति प्रेमक रहस्य ।

आब हमरा भुटकुन भाइक संग घटित एक घटनाक विवरण सुनू । एक दिन भुटकुन भाइ गेलाह बजार । करबाक छलनि कन्यादान, तँ एक टा पेट्रो-मेक्स कीनऽ चाहैत छलाह । एक टा बड़ का दोकानमे पहुँचलाह । प्रवेश करैत देरी एक टा नोकर पुछलनि—ओझाजी ! की लेब ? भुटकुन भाइ तुरन्त आँखि मूनि कुर्सीपर बैस गेलाह । ओ फेर पुछलनि—की लेब ? ओझाजी ! भुटकुन भाइ हाथसँ शान्त रहबाक इशारा करैत कहलथिन—वस्तु पछाति लेब, पहिने हमरा आनन्द उठा ले बऽ दियऽ । ओ दू मिनट हिनक मुँह दिस तकैत ठाढ़ रहल । तखन भुटकुन भाइ पुछलथिन—अहाँक घर सलमपुर थिक ?

ओ अकवकाइत कहलनि—“से काहे ओझाजी ! ई की पुछली ?” भुटकुन भाइ मुसकुराइत उत्तर देलथिन—अहाँ जे ओझाजी कहलहुँ से कान तृप्त भऽ गेल, हृदय प्रफुल्लित भऽ गेल । हमर विवाह सलमपुरे थिक, ओही ठामक लोक हमरा ओझाजी कहैत अछि । एतबा कहैत-कहैत हमर भुटकुन भाइ ओढूलक फूल जकाँ भकारार भऽ गेलाह ।

ओ बेचारा बकर-बकर मुँह तकैत अप्रतिभ भऽ गेल । ओहि ठाम एक दोसर ग्राहक छलैक । बेस डील-डील व्यक्तित्व । ओ हिनका झञ्झिक कऽ कहलनि—अहाँ तँ हिनका घुमा-फिराकऽ गारि पढ़ि देलियनि । बूझू तँ हमर भुटकुन भाइ ओहि तेहल्लाक हस्तक्षेपकेँ अपन मानहानि बुझलनि । कण्ठ धरि 'अग्रवादी दुराचा' वृद्धि पंचलक्षणम्' पद आबि गेलनि, मुदा दृढ़तासँ प्रतिवाद करबाक साहस नहि होयबाक कारणेँ ओतजसँ चलि देलनि । पेट्रोमेक्स तँ नहिये किलनि, संगहि आजुक यात्राकेँ कुयाला बूझि डेरा दिस घूरी गेलाह । बाटमे आत्मविश्लेषण करैत आबि रहल छलाह । अपने मोनमे प्रश्न उठलनि—अग्रवादी तँ बड़ होइत अछि । हमरा प्रतिवाद करबाक चाहैत छल, मुदा से हम किएक नहि कऽ सकलहुँ ? अन्ततः निष्कर्षपर पहुँचलाह जे ओ व्यक्ति चश्मा लगौने छल, ताहिसँ ओकर व्यक्तित्व भरिआयल छलैक । सँह कारण छल जे हमरा दहसति भऽ गेल । अर्य ! चश्मासँ लोकक व्यक्तित्व एतेक बड़ि जाइत छैक ? ओह ! एक टा चश्मा अवश्य लेबाक चाही ।

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

दोस्ती

(पृष्ठ ४ क शेषांश)

सबः खायल रतुका चोरायल दू टा नेनाक लहाश ।
हृदय-विदारक दृश्य छल ।

अरे ई की ? कनिये हँटि कऽ एक टा छोट
नूआ धरतीपर लेटायल छलैक । नूआ टटका
छलैक । नूआ उठवा लेल गेल । एक-दू ठाँ मने
चाड़, रस नोचल । कतहु-कतहु ओहिपर रक्तक
दाग । तेल आ घाम मिश्रित एक टा मीगिआइन
गन्ध ओहिमें बहराइत ।

डाक्टर ओहि नूआकेँ उठवा लेलनि ।

मारल हुड़ाइ, साड़िपर टडवा कऽ गाम
दिस विदा कयल गेल । तखने गाछीक एक टा
झमटगर गाछपरसँ घौना कऽ कनवाक जकाँ
एक टा भयावह स्वर सुनना गेल आ उपस्थित
लोकपर एक टा अव्यक्त आतंक गढ़गर होइत
गेलैक ।

भरि दिनक प्रदर्शनक उपरान्त ओ हुड़ाइ
माटिमे गड़वा देल गेल आ ओकरा माइनमे
पाओल गेल ओ नूआ डाक्टरक बैसकीक खिड़की-
पर राखि देल गेल । जे आवय से देखय ।

अगिला तीन दिन निर्विघ्न बीतल । शिशुक

चोरी वा हत्याक कोनो समाचार नहि आयल ।
किन्तु, कतहु-कतहु युवती नारीपर, कारी-सन
कयूक वा ककरो आक्रमण करवाक समाचार
आविये रहल छल । राति-विराति धुँधुआकऽ
ठुनकावाक स्वर बेसी सुनाइ देबऽ लगलैक ।
आतंक प्रबल भऽ कऽ भरि इलाकामे औनाय
लगलैक । भीषण बात तँ ई छलैक जे कनवाक
स्वर कखनो गाम सभपर, कखनो डाक्टरक
बंगला लगक सरिताक कातमे आ कखनो कोनो
गाछपरसँ सुनाइ दैक ।

तेसर दिन साँझमे, माधव कुमार आ डाक्टर
बैसल गप्प कऽ रहल छलाह कि डाक्टरकेँ
खिड़कीक ओहि पार एक टा कारी छाया परि-
लक्षित भेलनि । माधव कुमार सेहो देखलथिन ।

डाक्टर माधव कुमारकेँ अटल बैसल रहवाक
इशारा कयलथिन आ अपने खोखी कयलनि ।

कारी छाया हँटि गेलैक । पुनः वैह क्रन्दन-
स्वर ।

डाक्टर अपन दुनलिया भरि लेलनि आ
ओकर मुँह ओहि खिड़कीक बीच दऽ कऽ ओहि
परसँ ओ नूआ राखि देलथिन आ कोनो अज्ञात

प्रेरणासँ ठेहुनियाँ दऽ कऽ खिड़कीक नीचामे मुड़ी
अऽ कऽ कऽ बैसि गेलाह ।

किछु काल ओ लोकनि मूर्तिवत अपन-अपन
स्थानपर रहलाह । कारी छाया पुनः खिड़की दिस
अयलैक आ अपन एक टा रोमिल हाथ नूआ दिस
बढ़ौलकैक ।

“गड़ाम्-धायँ”—बन्दूक निनाद कयलक ।

कारी छाया चीत्कार कयलक । ठाढ़े भेल
महाकाव्यिक स्वरमे क्रन्दन करैत रहल आ
दोसरे क्षण अड़ड़ाकऽ खसल ।

देखल गेल तँ मध्यम आकारक ओ एक टा
नर-भालु छल ।

ओहि भालुक, ओहि नूआक आ ओकर
गाछपर धुँधुआक रहस्य तँ सरल भऽ उठल
किन्तु ओहि शिशुभक्षी हुड़ाइ आ ओहि भालुक
ओहन गढ़गर दोस्तीक रहस्य रहस्ये रहि गेल ।

किछु दिनक उपरान्त एक टा अवगुण्ठनमयी
आयल । ओ अपन कन्हा आ बाँहि परक नोछाड़
इशारासँ देखाकऽ अपन ओ नूआ लेलक आ
लत्ते-पत्ते चलि पड़ल ।

जीरो पावर

(पृष्ठ ५ क शेषांश)

बस, ओही दिनसँ मित्रमण्डलीमे बाजऽ लगलाह जे राति कऽ मेँही
अक्षर पढ़वामे आँखिक डिम्हा दुखाय लगैत अछि । चोरू भागसँ सभ विचार
देबऽ लगलनि—डाक्टरसँ आँखि जँचा कऽ चश्मा लैये लियऽ । शुरूमे चश्मा
लगा लेला उत्तर बाँदमे आँखिक रोगनी पलटि अबैत छैक ।

ओना कहवा ले’ हमर भुटकुन भाइ एकदम सुधंगे छथि । सभ टा गप्प-
सप्प, चेष्टा पात सुधंगे जकाँ बुझना जायत, किन्तु बुझैत छथिन सत्यानाश
धरि, से हमर दृढ़ धारणा अछि ।

अस्तु, एक दिन समय बना एक नेत्र-विशेषज्ञक ओहि ठाम गेलाह ।
प्रतिष्ठामे हमर भुटकुन भाइ ककरोसँ पछुआयल नहि छथि । विद्यार्थी तेहन
छलाह जे तीन-तीन गोटे स्वर्णपदक प्राप्त कयने छथि । डाक्टर साहेब बड़
आदरसँ बैसाकऽ आँखिक जाँच आरम्भ कयलथिन । देवालपर टाडल अंग्रेजीक
अक्षर बाँचऽ कहलथिन । भुटकुन भाइ कहलथिन—डाक्टर साहेब ! हमरा
अंग्रेजीक मात्र बी. अक्षर पढ़ऽ अबैत अछि । ई एहन भुवकौल वर्णमाला अछि
जाहिमे एक टा ‘भ’ अक्षर पर्यंत नहि अछि ।

डाक्टर साहेब पुछलथिन—‘बी’ अक्षर कोना आबि गेल ?
भुटकुन भाइक उत्तर छलनि—हमरा नामक पहिल अक्षर ‘बी’ होइत
अछि, तँ ।

डाक्टर साहेबक संग उत्तर प्रत्युत्तर होबऽ लगलनि ।

“बेस, देखियौक तँ ‘बी’ अक्षर कतहु छैक वा नहि ?”

“हँ, सभसँ मेहिकका पाँतीमे एक टा देखि रहल छी ।”

“सुझवामे कोनो कष्ट होइत अछि ?”

“जी, नहि ।”

“नोराइत अछि ? कुड़ियाइत अछि ? झलफलाइत अछि ?”

“जी, नहि ।”

“तखन की होइत अछि ?”

“आँखि मुनने रहैत छी तँ नीक लगैत अछि । ताकऽमे जेना आसकति
होइत अछि । तकराक इच्छा नहि होइत अछि । तँ एक टा चश्मा देल जाय ।”

“चश्मा आँखिक हेतु होइत छैक, आसकतिक हेतु नहि ।”

“जी, चश्मा आँखिक हेतु देल जाय ।”

“किन्तु, आँखिक हेतु चश्माक प्रयोजन नहि अछि ।”

तखन हमर भुटकुन भाइ खुजलाह—“डाक्टर साहेब ! हम कनेक नमतीमे
छोट छी कि ने ? तँ छुट्न लगैत छी आ चश्मा लगा लैत छिएक तँ हैँ....
भारी-भरकम भऽ जाइत छिएक ।”

डाक्टर साहेब कहलथिन—से नै कहू, तखन जीरो पावर लऽ लियऽ ।

हमर भुटकुन भाइ धोखैत डेरा घुरलाह—मरीचो पावर नहि, जीरो
पावर, मरीचो पावर नहि, जीरो पावर... जी...रो...पा...व...र ।

० ० ०

सत्य कथाक खोज

(पृष्ठ ३१ क शेषांश)

—“केहन दस्तूरी ? हम एहिठाम सत्य-कथाक खोजमे आयल छी ।
दस्तूरी कभीक चाहैत छह ?” हम गरजिकऽ बजलहँ । ओ कने सिटपि-
दाबल ।

—“बाबूजी काज छोट रहओ वा पैघ यैह सिरिस्ता छैक, पुछि
लियौनि नेहिनका !” तावत दोसर व्यक्ति ओहि चपरासीक हाथमे एकटा
बू टकही नोट दऽ माथक घाम पोछैत विदा भेलाह । चपरासी हुनका
‘सैलूट’ देलक ।

—“बाबूजी, एहि असार संसारमे सत्यक लेल व्यर्थ वौआइत छी ।
सत्यकेँ चिन्हवाक लेल नजरि चाही ।”

चपरासीक दर्शनसँ हमरा दिव्य-ज्ञान भेटल । ठीके सत्यकेँ चिन्हवाक
लेल नजरि चाही । आ हमरा बुझायल जेना ‘ट्रेजरी’क प्रत्येक ‘क्यू’मे
सत्य-कथा छिड़ियायल हो । हम ओकरा समेटऽ लगैत छी ।

० ० ०

छौ गोठ अष्टपदी

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

विवेकक श्राद्ध

हमसभ जहिमे जन्म लेलहुँ अछि
ताहि युगक किछु चित्र देखि ली
जे कहबथि राष्ट्रक निर्माता
तनिक विचित्र चरित्र देखि ली
नव्यताक उज्ज्वल प्रकाशमे
आइ विवेकक श्राद्ध अनुष्ठित
दस गरदनियाँ आइ ज्ञानकेँ
आसनपर विज्ञान प्रतिष्ठित

नवतुरिया

सावधान ! हमरासँ हटले रहू
थिकहुँ हम सभ नवतुरिया
घोरि देव हम आब पानिमे
चुप्पेचाप जहरकेर पुड़िया,
अछि जिजीविषा, मुदा युयुत्सा
अन्तस्तलमे मारि करै-ए
कुंठा ओ संत्रास-ग्रस्त छी
बुद्धि हमर बपहारि कटै-ए

व्यवस्था

छोट पैघ वा जातिभेदकेर
रेखा मानवकृत अछि खीचल
एक वर्ग चढ़ि गेल माथपर
आर पयर तर रहले पीचल
तामल खेतक सदुश समाजक
ऊँच नीच सम्पूर्ण व्यवस्था
चिरीचोत भेल वस्त्रक सन
देखि रहल छी सभक अवस्था

प्रगतिशीलता

दया, कृपा, करुणा, उदारता
सङ्गल पुरातन थिक परम्परा
प्रगतिशीलताकेर नामपर
आइ मनुजता रहल थरथरा
लाज-धाख रखइत छी ककरो
तँ भीतरसँ बुझू फोंक छी
माय-बापकेर कहल करै छी
टहल करै छी ? बूढ़ि लोक छी
बुधियार

सङ्क, महल, पुल बनबे करत
पहिने पास कराय लियऽ बिल
फूसि बजै छी ? नीक करै छी
एहने लोक कहावय काबिल
लऽ कऽ सत्यक नाम, फूसि
बजबामे कोनो दोष न होइ छै
कहिते छै बँमान लोक
तेँ बुधियारबाकेँ रोष न होइ छै

नैतिकता

नैतिकताकेर हासक चर्चा
सभा-समितिमे होइ छै एहिना
अपन लाल होइत हो गोटी
नहि ताकी पुनि वामा दहिना
बडुछा सटकल देखि झोझमे
सत्ताकेर लगाबी लग्गी
होइत रह्यो पेट्रोल महंग
हम अपन चलायब पुरने बग्गी

नव पराती

: प्रो० श्री हरिमोहन झा :

मानिनि ! आव उचित नहि मान ।

एखनुक रंग कहल नहि जाइछ
भेल कंठगत प्रान ।

अन्नक दाम अकाश ठेकल अछि,
रूपये सेर न धान ।

चाउर-गहुम भेल हीरा-मोती,
मकई मणिक समान ।

मिसरिक मोल बिकाइछ मडुआ,
भेल जनेर महान ।
अपनाके मेवामे गनि कऽ
अरुओ करय गुमान ।

माडुर माछक स्वाद बिसरि गेल
बिसरल मधुर मखान ।
बूट - बदामक दाम ने पूछ
सातु भेल पकवान ।

राधा सभ आधा रहि गेली
भेला कृष्ण जमान ।
बांसे नहि तँ उठत कथीपर
आव बांसुरिक तात्र ?

की खाकऽ आवक कवि करता
कनक कलशकेर गान ?
कतबो कामिनि स्नान करथु
नहि हनइत छनि पंचवान ।

एहि सहगीमे चलत आव नहि
ओ कटाक्षकेर बान ।
आवहु ज्ञान करू हे मानिनि !
छाड़ि दियऽ अभिमान ।

गृहस्वामिनीक गीत

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

जय-जय भैरवि समुर-भयाउनि
सामु-सताउनि देवी
पति छथि पशुपति, ते तकइत छी
अबिते 'सूट'क जेबी
वासर-रैनि चरुण-युग शोभित
रहइछ कोमल चट्टी
कतओक सोझ सिउँथिके कयलहुँ
गेल घुमुकि कनचट्टी
गौर वरन, स्नो-पाउडर लेपल
पर्श मुशोभित हाथे
भैसुर-चौर-समुर सभ अबिते
अपन झुकाबथि माथे
कटकट विकट ओठ पुट पाँडरि
रहय लिपस्टिक पोतल
एयर-टाइट कॉक छी हे मिस !
आ मिस्टर छथि बोतल
झनझन-झनन बजै' अछि चूड़ी
हन-हन पट-पट ठोरे
चिर कुमारिके ! माथ न झाँपिय
टेल्व करिय नहि कोरे
थर-थर कपइत रहइछ डरसँ
नौकर ओ चपरासी
ननदि देयादिनि कऽ न सकै छथि
लगमे आवि उकासी
बैण्ड बजा हसबैण्ड मड.' छथि
प्रत्यह भोरे माफी
इन्दिराक युगमे जनमलि छी
पीबू नित उठि काफी
कटक डरै सभ टीक कटौलि
उखड़क डरसँ मोछो
अछि प्रताप नहि गाल बजयबामे
सकती क्यो धौछो
विद्यापति कवि जीवित रहितथि
करितथि नहि अनुमानो
सहज कुमति वरदायिनि छी ते
मडि.तथि नहि वरदानो
बतह कवि कर जोड़ि कहै छथि
भाभट अपन सम्हार
फेण्डक संग सिनेमा जा कऽ
दुनू कुलके तारु



दिवंगत पं. क्षेमधारी सिंह 'श्रीकर'क अप्रकाशित पद्य

: प्रो० श्री बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर' :

मैथिलीक प्रतिष्ठित दार्शनिक भक्त कवि 'श्रीकर' साहेबक अद्यावधि उपलब्ध प्राचीनतम पद्य-रचनाके प्रकाशमे आनि ओकर विश्लेषण कयलनि अछि दिवंगत कविक विद्वान् सुपुत्र प्रो० श्री रमाकरजी ।

मैथिली साहित्यक एक प्रख्यात स्रष्टा पं० क्षेमधारी सिंहक रचित सांख्यबोधोक्ति ग, श्रीकर-भक्तितरंग, निबन्ध-चन्द्रिका आदि अतिप्रिय ग्रन्थ तथा 'फुटकर रचना पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित भेल अछि । हिनक जन्म मधुबनीक जिलानगरमे १८६४ ई० मे भेल तथा देहान्त १९६१ ई० मे । उपलब्ध सामग्रीक अनुसार प्राचीनतम रचना-८-१-१९१६ ई० क रचित "भवन छोड़ै तन खाक लगौलक बसहापर असवार...." (वैदेही-जुलाई—१९७१ ई०)मे प्रकाशित भेल । परंच अन्वेषण कयला उत्तर एहि गीतसँ पहिने रचित एक गोट गीत भेटल अछि जे ओही पुस्तिकामे कविक अपन तिरहुता अक्षरमे पेनसिसँ लिखल अछि । भ्रमवश पूर्व प्रकाशित नहि भऽ सकल । दुर्गा सप्तशतीक अंग्रेजी अनुवाद, संस्कृतक 'सुरथ-चरितम्' महाकाव्य, क्षेमकाव्य कल्पद्रुम तथा मैथिलीक श्रीकर भक्तितरंग आदिसँ ज्ञात होइत अछि जे साधकप्रवर महाकविके दुर्गासप्तशतीक प्रति विशेष अनुराग छलनि । युवावस्थेसँ हिनक एहि प्रकारक प्रवृत्ति देखना जाइत अछि । अनुमान कयल जाइत अछि जे दुर्गासप्तशतीक चारिम अध्याय शक्रादि-स्तुतिक भावानुवाद आरम्भ कयलनि, परंच एतब अंश धरि भऽ सकल । संस्कृत तथा अंग्रेजीक विद्वान नवयुवक कविक मातृभाषाक प्रति अगाध प्रेम व्यक्त होइत अछि । भाषाक दृष्टिसँ आइसँ पचपन वर्ष पूर्वक शैलीक साक्षी ई पद्य अछि । गवेषकक सुविधाक हेतु अनुरूप उद्धृत कयल जाइत अछि—

इन्द्र मिलि बुधगण सब पूजल
देविक पाएर ए माई
महिष असुर सुर अरि अशु तेजल
जखन समरमे देवि छली ।
हरपि हरपि निज शीश मुकुट सब
राखल सुरगण ए माई
करवर जोड़िथि करथि सुपूजा
विविधि सुनावथि गीत अली ॥
सकल जगतमे व्यापक देखल
देवक वृन्द सुनल माई
मुनिगण पूजल जनिक चरण युग
से नित करथु शुभ काज कही
जिनक अपार पार ने पओलनि
हरिहर धाता ए माई
से मति करथु लोक सुरक्षा
विपत्तिक नाश सिद्ध काली
जे निज लक्ष्मी सुधर्मक,
पायो घर विपदा ए माई ॥
शक्रादि स्तुतिक एतवा मूल अंशक तात्पर्य
एहिमे आयल अछि,
ऋषिवाच—'शक्रादयः सुरगणा निहतेऽ-
तिवीर्ये, तस्मिन् दुरात्मनि सुरारि बले च देव्या ।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांशा वाग्भिः
प्रहर्षपुलकादगमचारुदेहाः ॥ देवा ऊचुः ॥
देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या, निःशेष देव-
गणशक्तिसमूहमूर्त्या । तामम्बिकामखिलदेव
महिषि पूज्या, भक्त्या नताः स्म विदधातुः शुभानि
सानः ॥ यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा

हरश्च नहि वक्तुमलं वलं च । सा चण्डिकाऽखिल-
जगत्परिपालनाय नाशाय चाशुभयस्य मति
करोतु ॥ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवने लक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदये पु बुद्धिः....."
उपर्युक्त मैथिली रचनामे "माई" तथा
"अली"क प्रयोगसँ प्राचीनतम विद्यापतिक
सम्प्रदायक अनुसरण बुझना जाइत अछि । शाक्त
भावनासँ ओतप्रोत महाकविक प्रवृत्तिक ई आदिम
साक्षी थिक एकर पश्चाते भवानीशत-नामस्तोत्रसँ
अतिरिक्त संस्कृत ग्रन्थ सभक रचना भेल । एहि
समयमे दुर्गा सप्तशतीक अनुवाद सम्पन्न भऽ गेल
छल । अंग्रेजीमे भूमिका लिखने छथि जे प्रकाशित,
ग्रन्थक सम्पादनक समयमे (१९४२ ई०) उपलब्ध
नहि भऽ सकल आ अनुवादक अपने दोसर भूमिका
लीखि ओहिमे देलनि ।

एहि गीतमे प्रसादगुण सहित सरसता पाओल
जाइत अछि । लोक साहित्यक ई एक प्राचीन
सम्पत्ति थिक आ गीतकाव्यक द्वारा शास्त्र-पुराणक
प्रचार मातृभाषाक माध्यमसँ करवाक एक सत्सं-
कल्प घोषित होइत अछि । वस्तुतः प्राचीन गीत
सभ जकरा मौलिक बुझल जाइत अछि ताहूमे
अनेक ठाम अनुवादक आभास अछि तेँ भाषा
साहित्यकेँ समृद्धिशील बनयबाक संगे पण्डित
रचयिता लोकनि संस्कृतक आदर करवाक उद्देश्यसँ
एतादृश रचना कयलनि । प्राचीन भक्ति साहित्यमे
विरल एहन पद्य भेटैत अछि जाहिपर संस्कृतक
छाया नहि हो । तकर कारण अछि शास्त्रीय
सत्यता जकर स्वरूपमे परिवर्तन आनब मातृभाषा
प्रेमी सुधीजन उचित नहि मानलनि । एहि प्रकारक
रचनामे कतहु-कतहु विलक्षणता परिलक्षित होइत
अछि जे मैथिलीक कलेवरमे अधिक, आह्लादक
बुझना जाइत । 'हरपि हरपि'मे स्वतः पुलकक ध्वनि
अछि संगहि भाषाक प्रसाद । साधक कविलोकनि
अपन हृदयक उद्गार एहि प्रकारे व्यक्त कय-
लनि अछि । विषयकेँ सर्वजनबोध्य बनायब तथा
मिथिलाक संस्कृतिकेँ अधुण खबाक ई एक
उपादेय दृष्टिकोण व्यापक रूपेँ देखना जाइत
अछि । मातृभाषाक साहित्य-शोधसंलीन समाजक
समक्ष ई एक उदाहरण मात्र उपस्थित कयलनि
अछि । सुधीजन एहि दिशा दिस ध्यान देताह ।
अनुसन्धानक दृष्टिसँ कोना-कोना साहित्यक प्रगति
भेल अछि, कतेक दिन धरि एक धारा रहल ताहि
सभक परिचय एहि सभसँ होइत अछि । महाकविक
कृतित्व व्यक्तित्वपर शोध कयनिहार मनोविगण
कृपया ध्यान देताह । अनेको साधक कविक कृति
पौतीमे कुहरि रहल अछि, ओकरा प्रकाशमे अननहि
मैथिलीक मिहिरक ज्योति पसरत । ० ० ०

डाइरीक एक पृष्ठ

आजुक दिन

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

रातिमे भोजनोत्तर दिन भरिक
कार्यकलापक आत्म निरीक्षण कय-
लहुँ । प्रान्त भरिमे अराजकताक
स्थिति उत्पन्न भऽ गेलाक कारणेँ
स्कूल-कालेज सभ बन्द । छोटी छोट
नेनालोकनिक बुद्धिमे सरकार ताला
मारि देने छैक ।

भरि दिनमे कोनो प्रकारक किछु
रचनात्मक काज जेना किछु लिखि
लेलहुँ वा पढ़िये लेलहुँ, बाड़ीझाड़ीमे
खुरपीये चला लेलहुँ, आवासक
स्वच्छताभियानेमे लगलहुँ अथवा किछु
छातक उत्तर पुस्तिकाक संशोधने

कयलहुँ तँ बुझलहुँ जे आजुक दिनक
ई उपलब्धि भेल ।

एहि आकस्मिक छुट्टीक उपयोग
किछु विशेष काजमे होइत से सभ दिन
सोचित रहलहुँ, कोनो विशेष कार्य
सम्पादित नहि कऽ सकलहुँ । आजुक
आत्मनिरीक्षणमे देखल जे दिनमे
सुतलहुँ, साँझमे खेललहुँ, साँझमे
हफिअयलहुँ आ सबेर सकाल अर्थात्
निर्धारित समय १० बजेसँ पूर्वे ओछा-
ओन पकड़लहुँ । ओहो ! आजुक दिन
निरर्थक गेल ।

(शेष पृष्ठ २४पर)

बौक आत्मा सभ

(पृष्ठ १०६ शेषांश)

पसिन्न छैक, से वृक्षल छैक ओकरा । ब्लाउज लऽकऽ ओ किताबस
इनमनायल रैक दिस आयल । ओकरे देहक सड-सड श्यामचन्द्रक आँख
सेहो रैक लग अयलैक ।

—‘की तकै’ छे ? किताब ? एक बेर गाड़ीमे छूटि गेल कतहु ।
श्यामचन्द्र कहलकै तँ एक क्षण बड़ दयनीय भऽ कऽ ओकरा दिस देख-
लकै ओ ।

—‘हम नै जनैत रही, एतेक माहुर पीने बैसल होयब अहाँ ।’
कहैत काल ओकर स्वरक दुःख देखार छलैक ।

—‘तोरा विश्वास नहि होइत छौक ?’

ओ पोथीसभ सँतिकऽ राखऽ लागल । एक-एक टा पोथीकेँ हाथपर
राखि पटकलक, धूरा झाड़लक आ क्रमसँ सँतलक । रैक परक अखबार
बदलि देलक । रैकक पोथ्याक नीचाँमे कागज तहिया कऽ रखलक
ओकरा संतुलित करबाक लेल आ सभटा सम्हारिकऽ धरऽ लागल ।
श्यामचन्द्र चुप-चाप ओकरा देखैत रहलैक । पता नहि किएक, किचकिचा-
कऽ ओकरा तमसयवाक हँसी करबाक सभटा उत्साह श्यामचन्द्रक मनेमे
मिझा गेलैक । आव ओ किछु नहि बाजत । चुपचाप ओकर बातक जबाब
दैत रहतैक—‘हँ’ ‘नै’ मे ।

धूरा झारैत काल ओ बीच-बीचमे साड़ीसँ नाक-कपार पोछैत छल
आ बजैत किछु नहि छल । वस्तु रखैत काल ओ श्यामचन्द्रक आँखिमे
एहि कोणमे पड़ैत छल जे ओकर आकृतिक दहिना हिस्सा आ पीठ
तथा बाँहि देखाइ छलैक । से ओ देखि रहल छल । एकटा साँस
लैत ओ उठल आ फेर किछु ताकऽ लागल चारू कात । नहि भेटलैक
तँ निराश भऽ गेल । मुदा बाजलि किछु नहि । तखन अपन अर्धचोपर
पड़ल होलडाँल आ ताहिपर धयल प्लास्टिकवाला साजीकेँ हँटीलक ताहिपर
अपने चढ़ि गेल आ करीब-करीब कूदि-कूदिकऽ, कोन सभमे छत दिस लटकल
झोल आ जाली सभकेँ झारऽ लागल । से दृश्य बैसल श्यामचन्द्रक ततबा
असह्य बुझलैक जे खोजा उठल—‘वताहि भऽ गेलेहँ की ?’ छोड़ ई ।
खामखा कपड़ो-लत्ता दूरि कऽ लेल । छोड़ ।

मुनियोकऽ ओ चुपचाप कुदैत, सफाईमे लागल रहल । हकमियो
गेल । कोनो ध्याने नै देलक । फेरो दोसरा कोन दिस जयबा लेल
उतरल । तखन देखलक श्यामचन्द्रकेँ ।

पसेनाक सूक्ष्म बिन्दु सभसँ चुहचुहायल, पातर धूरासँ भरल ओकर मुँह
देखिकऽ ओकरा कोनादन लगलैक । बाजल किछु नहि, खाली देखैत
रहलैक ।

—‘अहाँ खा नहि रहल छी ?’ श्यामचन्द्रकेँ पुछलकै ओ ।

—‘एना नहि नीक लगैत छैक । एक छन ले’ अयलेहँ आ ई नोकर-
बला काज . . . । एक पल बैसबै नहि ?’

—‘देखियौक, समय कतेक कम छैक । अहाँ खाउ तावत, हम कने एहि
वस्तु-जातकेँ सरिया दी ।’

एहि बेर ओकर स्वरमे ततेक स्निग्ध ममत्व रहैक जे एकाएक ओ खूब
उत्साहसँ भरि गेल । लगभग धीयापूता जकाँ जिद करऽ लागल—‘नहि,
एकसरे नीक नहि लगै-ए हमरा . . . ।’

—‘मुदा देखू, हमर हाथ केहन मैल अछि । कोना खा सकैत छी ?
ओ अपन हाथ तेना देखौलक श्यामचन्द्रकेँ जेना कोनो ‘दादी’ कोनो
पोताकेँ देखौने हो । मुदा आकृतिसँ बुझलैक जेना ओ नहि मानलकै ।
किंचित विहुँसल ओ ताहिपर । फेर आगाँ आयल ।

—‘अही’ खोआ दियऽ दू दाना । आऽ । ओ मुँह बाजि देलकैक ।
श्यामचन्द्रक हाथ काँपि गेलैक । तत्काल ओकरा बुझबेमे नहि अयलैक
जे ओकरा की करबाक चाहिएक । अडुरी मे दबायल काजूक दाना जेना
खूब भारी भऽ गेलैक । पहिल बेर तँ तश्तरियेमे टनमनाकऽ खसि पड़-
लैक । तखन ओकर पल झुकि गेलैक ।

—‘की बात ?’ ओ खूब गम्भीर स्वरमे स्नेहसँ पुछलकैक । ओ फेर
अपन काजमे लागि गेल ।

—‘नहि-नहि । ई नहि कऽ सकबै’ से कहि बैत छियो ।’ श्यामचन्द्र
हड़बड़ाइत ऊठिकऽ रोकि रहल छलैक । ओ ब्लाउजसँ फर्शकेँ बहारऽ
लागलि रहैक तँ ई बात ओकरा नहि सह्य भेलैक । ओ मुदा निहृद
भावसँ फर्शपर निहुरलि धूरा, कागजक टुकड़ी देवालसँ झरलाह सीमेंट-
चूनकँ साफ करैत रहल ।

—‘एह, फर्श नहि साफ कर एना । कोनादन लगै-ए ।’ ओ करीब-
करीब विनती जकाँ करऽ लगलैक ।

—‘कोनादन की लगैत छैक ? कहियो कहियो तँ बहारि देल करियो ।
अपन काज कयलासँ कोनो मनुख छोट नहि भऽ जाइत अछि । महात्मा
गान्धी कहने रहथिन’

—‘तोहर बयस हमरासँ कैक वर्ष कम छौक ।’ श्यामचन्द्र यथासाध्य
अपन स्वरक कठोरताकेँ गम्भीर करैत कहलकैक । ओकर स्वरसँ चौकि-
कऽ ओ देखलक श्यामचन्द्रकेँ ।

—‘अहाँकेँ अघलाह लागल तँ माफ कऽ दियऽ ।’ ओ बाजलि आ
अपेक्षाकृत एहि बेर किछु शिथिलतासँ ओकर हाथ ससरैत रहलैक ।
साफ-सुफ आ कारी बुन्दाबला उजरा ब्लाउज मैल-कुचैल केहन दन तँ
बेदरंग भऽ गेल रहैक जे ओकरा देखिये कऽ श्यामचन्द्रक दुःख आ ग्लानि
भऽ रहल छलैक ।

—‘अघलाह लागि गेलौक ?’ श्यामचन्द्र जेना एही प्रश्नसँ स्वयंकेँ
सजाय देलक ।

—‘नै ।’ आधे जकाँ उत्तर देलकै ओ ।

ओकर आकृति ततेक झुकल छलैक जे ओ ओकरा देखि नहि रहल
छलैक । बेर-बेर उजरि ओकर खोपा, खाली गर्दन आ बाँहि ठेहन चाँछिकऽ
आपस जाबि जाइत छलैक । ओ बेर-बेर चाहैत छल—ओकर मुँह देखि-
तैक, आँखि देखितैक, आँखिमे कँपैत परिछाँहीकेँ चीन्हैत, ठोढ़क कंपन
आ माथपरक रेखा सभ गनितय—सम्पूर्ण आकृतिकेँ जानि जैतय . . . ।
परंच ओ झुकलि छलैक ।

कोठलीक आधासँ बेसी फर्श साफ भऽ चुकल छलैक । ओकरा सोझाँमे
धूराक टेढ़मेढ़ तह सभ रहैक, मोट-पातर डाईट सभ रहैक । एहनमे ओ कतेक
कतेक ‘अभागलि’ लागि रहलि छलैक ? श्यामचन्द्रकेँ सहानुभूति होबऽ
लगलैक ।

—‘एक क्षणक लेल तो’ अटकलें आ ताहूमे दुःखी कऽ देलियौक ।’
ओ किछु नहि बाजलि । सक्रिय रहल । चुपचाप चौकठि दिस धूराकँ
समेटने बढ़लि जाइत

—‘कह तँ भाग्यकेँ मानैत छे तो ?’—श्यामचन्द्र वातावरणकेँ
हल्लुक करबाक लेल ई प्रश्न कयलकैक । ‘एक युग वीति गेलैक . . .’

—‘मुदा सत्ते, तखन अहाँ एतेक पैघ हिसक नहि छलहुँ ।’—ओ अप-
त्याशित बाजि उठलैक । बात ओकरा चुभ दऽ लागि गेलैक । ओ ‘हिसक’
कहने रहैक सँह ओकरा रोमांचक कष्ट बुझायल रहैक । ओ पूछऽ चाहने
छलैक जे से कोना ? परंच तावत ओ अपन शरीरकेँ निष्क्रिय छोड़िकऽ
साँसकँ कोनहुना सम्हारैत एक्के वाक्य बाजल रहैक—‘अहाँ मन
पड़ैए ?’

ओकर आँखिकेँ देखैत बुझाइत छलैक जेना ओकर बन्द होयब वा
खुजले रहब एही एकटा प्रश्नक उत्तरपर निर्भर रहैक । श्यामचन्द्र एहि
प्रश्नकेँ चुपचाप सहि रहल छल । ओकरा सोझाँ निष्प्राण जकाँ बैसल
छल ।

खोपा कँ कुर्सीक पीठमे टेकिऽ हत्थापरसँ अपन हाथकेँ कोरामे खसवैत
किछु काल ओहो चुप बैसलि रहलि प्राणहीन जकाँ । श्यामचन्द्र ओकरा
टुकुर-टुकुर देखैत छलैक । बैसल ।

भरि कोठली घोंटल चुप्पी आ साँसक स्वर रहैक, मात्र । श्यामचन्द्र
सोचि रहल छल, कवनो-कवनो असहायता सेहो एहि सीमा धरि सह्य भऽ
जाइत छैक ।

ओ ओकर नाम लेलक ।

उनटा पाल

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

हमहूँ छी एही समाजमे,
जकरा खातिर गान्धी बाबा तिल-तिल जीवन अर्पण कयलनि,
जकरा खातिर सहस-सहस बलिदानी रक्तेँ तर्पण कयलनि ।
जकरा खातिर कते माय-बहिनिक सिउँथिक सिन्दूर मेटायल,
जकरा खातिर कते मनीषी लाठी खा' खा' भूमि लेटायल ।
जकरा खातिर श्वास-श्वाससँ एक प्रबल फूत्कार उठल छल,
जकरा खातिर प्राण-प्राणसँ प्रलयकार हुंकार उठल छल ।
ताहि दिनक देखल सपना की एखनो धरि साकार भेल अछि ?
युग-युगसँ कुण्ठित समाजकेँ एखनो धरि उद्धार भेल अछि ?
हमहूँ छी एही समाजमे,

अपनो छी एही समाजमे,
जन्म-सिद्ध अधिकार सभक थिक ई स्वतन्त्रता,
देश-समाजक अहंकार नहि थिक स्वतन्त्रता ।
करबा ले' उपभोग तकर हम ले' छी पक्कड़
एतबे टा बुझवामे सभ छी लाल बुझवकड़ ।
झौड़ मारि रहलहुँ सुख-सुविधा पयवा ले' हम,
किन्तु न छी तैयार तत्त्व दिस जयवा ले' हम ।
ई समाज स्वाधीनताक की मोल बुझै-ऐ,
स्वार्थ-सिद्धि लग ककरो ने निज टोल सुझै-ऐ ।
नहि आवश्यक वस्तु तुबै' छै' आसमानसँ
नहि उपभोग्य पदार्थ चुबै' छै' संविधानसँ ।
एहि हेतु देशक श्रम-धन अनिवार्य होइत छै'
एहि हेतु प्रत्येक डेग सुविचार्य होइत छै' ।
ह-ह कथलासँ नहि बढ़इत छै' कोनो देशक उत्पादन,
गाल बजौने रचना-मूलक काजक नहि होइ' छै' सम्पन्न ।
हमहूँ छी एही समाजमे,
अपनो छी एही समाजमे,

ओहो छथि एही समाजमे,
भोगवाद कोनो समाजकेँ चिवा जाइ' छै',
अपन कुकर्म अपन गरदनकेँ दवा जाइ' छै' ।
भोगवाद सौँसे समाजमे वस्त्र फोलिक नाचि रहल अछि,
भोगवाद अन्तरक आगिकेँ आर फूकि कऽ आँचि रहल अछि ।
की भविष्य भारतक भालपर अंकित अक्षर बाँचि रहल अछि,
आइ विवेक हमर पौरुषकेँ चढ़ा चाँलपर जाँचि रहल अछि ?
ओहो छथि एही समाजमे,

सभ क्यो छी एही समाजमे,
आइ आत्म-विश्वास कदाचित टूटि जाय तँ,
आकाशक लोभ ई धरती छूटि जाय तँ,
थिक वृक्षबाक अदिन्ता नचइत अछि कपारपर,
पाथर अछि पड़ि गेल सेहन्ताकेर पथारपर ।
काक डकै' अछि, पहिने एकर पट्टू ई भाषा,
आइ करक अछि निर्धारित नीतिक परिभाषा ।
ई समाज दिग्भ्रान्त आइ उत्फाल बनल अछि,
देशक नौकामे ई उनटे पाल तनल अछि ।
हमहूँ छी एही समाजमे, अपनो छी एही समाजमे,
ओहो छथि एही समाजमे, सभ क्यो छी एही समाजमे ।